Martha Farrell Foundation

सड़क, सिग्नल और सुरक्षा

मार्था फैरल फॉउंडेशन (MFF), महिला घरेलू कामगारों के साथ, सुरक्षित और गरिमापूर्ण कार्यस्थल के अधिकार को ले कर 2016 से ही काम कर रही है। महिला और कामगार होने के नाते सुरक्षित महौल उनके लिए एक मौलिक अधिकार हैं।

घरेलू कामगार अपने कार्यस्थलों तक पहुँचने के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट पर निर्भर रहते हैं, और अक्सर दिन के कई घंटे आने-जाने में बिताते हैं। इसलिए, यह ज़रूरी है कि ये पब्लिक ट्रांसपोर्ट उनके लिए सुरक्षित और सुलभ हैं।

26 अप्रैल 2024 को, दिल्ली और गुरुग्राम के विभिन्न समुदायों से MFF से जुड़ीं 30 महिला घरेलू कामगार लीडर्स हमारे साथ हमारे एक चर्चा में शामिल हुईं।

चर्चा के दौरान, महिलाओं ने पब्लिक ट्रांसपोर्ट से यात्रा करने के उनके अनुभवों और सुरक्षित करने के लिए सुझाव पर बातचीत की

चर्चा के दौरान महिलाओं ने इन विषय को छुआ

- पब्लिक ट्रांसपोर्ट में उनकी पहली यात्रा कैसी रही?
- कौन सा साधन उन्हें ज़्यादा पसंद और सुरक्षित लगता है ?
- पब्लिक ट्रांसपोर्ट से यात्रा करने में उन्हें कैसा महसूस होता है ?

ये ज़ीन उनके द्वारा की गई बातचीत की एक छोटी सी झलक है

मुझे बस में उल्टी होती है और मैं हमेशा खिड़की के पास बैठना पसंद करती हूँ । जब पहली बार बस चढ़ी थी तो एक हफ्ते तक बीमार हो गयी थी।

मुझे ट्रेन से यात्रा करना पसंद है

नसीमा

मुझे साइकिल चलाना आता है - मैं स्कूल और काम साइकिल चलाके जाती थी। जब मैं 23 साल कि थी, तब साइकिल पर बैठ कर ब्यूटिशियन का कोर्स करने जाती थी। बहुत भीड़ के कारण डर लगता था।

जब मैं 8 महीने प्रेग्नेंट थी, तब रात को साइकिल से लौट रही थी। एक गाड़ी वाले के साथ मेरा एक्सीडेंट हो गया। इस घटना के बाद मैंने साइकिल चलाना बंद कर दिया और 5 साल से साइकिल चलाई ही नहीं हूँ। इसलिए अब दूर का काम नहीं पकड़ती हूँ। पास में जो मिलता है, वही करती हूँ।

सोनिया

मैं पहली बार बस में गयी तो मुझे बहुत अच्छा लगा था, क्यूंकि मैं अपने पति के साथ दिल्ली घूमने गयी थी।

हम चारों ओर घूमें फिर हम ऑटो में भी घूमने गए। फिर मेट्रो से बच्चों को मार्केट घूमने ले गयी।

मुझे घूमना इसलिए अच्छा लगता है क्यूंकि मुझे दिल्ली को देखने का बहुत शौक है।

बबिता देवी

मैं अपने पति के साथ गांव से 1994 में आयी, और बस में बैठी तो डर लगता था। दिल्ली से भी डर लगता था। लेकिन अब मुझे डर नहीं लगता - अब मैं अकेली बस, रिक्शा, मेट्रो में ट्रेवल करती हूँ। अब तो मैं अपने बच्चों को लेकर कहीं घूमने भी चली जाती हूँ। अब अच्छा लगता है।

नंदिनी

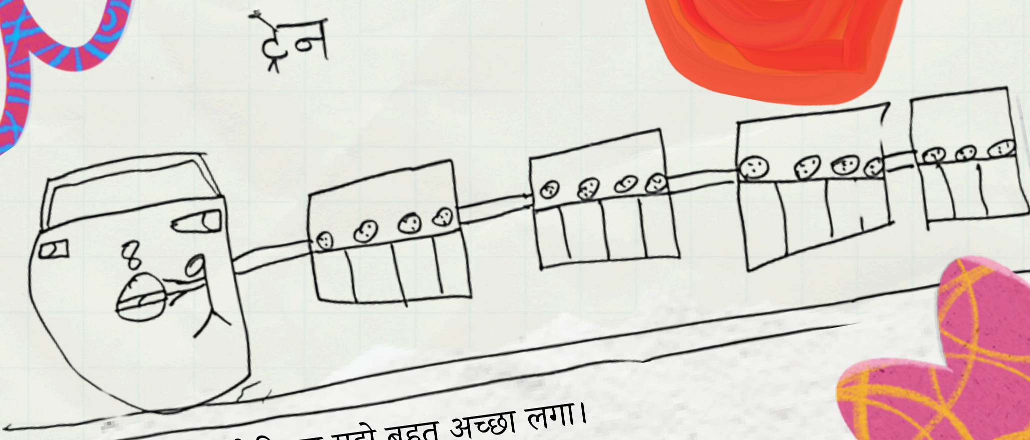

मैं पहली बार जब ट्रेन में बैठी तब मुझे बहुत अच्छा लगा।

लेकिन जब ट्रेन से उत्तरी तो मुझे ज़मीन ऊपर-नीचे लगने लगा - तब मुझे लगा कि मैं कहाँ आ गयी हूँ । मुझे लगा शायद सिर्फ ट्रेन से उतरने में ऐसा लगा होगा मुझे, लेकिन जब मैं घर पर भी आयी तब भी सब ऊपर-नीचे हो रहा था। तब मैंने अपने पति से कहा कि अब मैं कभी भी ट्रेन से नहीं जाऊंगी। मेरे पति ने कहा कि पहली बार आयी हो इसलिए तुम्हें लग रहा है और एक-दो बार आओगी तब ऐसा नहीं लगेगा।

रेनू

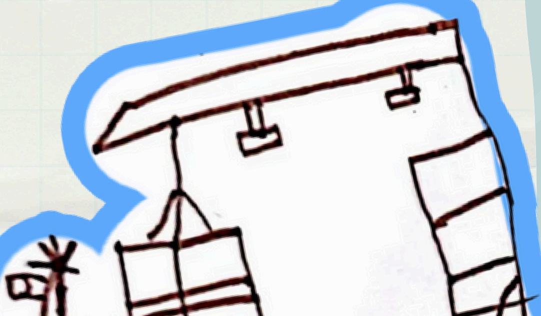

पहली बार मैं अपनी बहन के साथ बस में चढ़ी, तो मुझे बहुत डर लग रहा था कि मैं इतनी दूर बस से कैसे जाऊंगी और कैसे पहुंचूंगी। जब मैं आई तो मैंने देखा कि यह दिल्ली शहर बहुत सुन्दर है। शाम का वक्त था और बहुत अच्छी लाइटें जल रही थीं। ऊँची-ऊँची बिल्डिंग अच्छी लग रही थीं। मुझे बहुत अच्छा लगा यहाँ आ कर और अब मैं कहीं भी जा सकती हूँ।

ममता

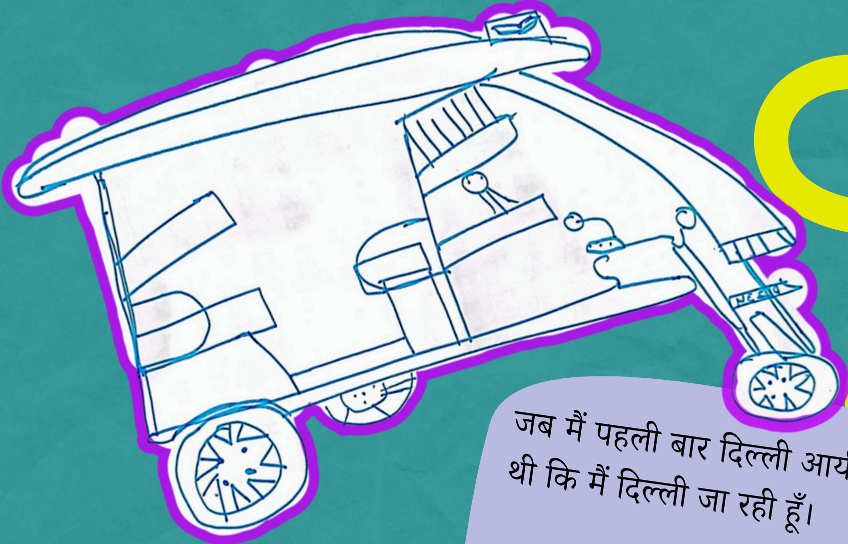

जब मैं पहली बार दिल्ली आयी तो मन में एक उत्साह थी कि मैं दिल्ली जा रही हूँ।

मैंने कभी मेट्रो नहीं देखी थी और ना ही चलने वाली सीढ़ी देखी थी। जब मैं पहली बार मेट्रो में बैठी तो अच्छा लगा। मुझे बैठने के लिए सीट नहीं मिली, लेकिन उस वक्त उत्साह में वो भी भूल गयी और मैं पूरे रास्ते खड़े हो कर ही आयी।

चलने वाली सीढ़ी पर मुझे चढ़ना नहीं आता था, डर लगता था । जब मैं पहली बार सीढ़ी में चली तो काफी देर तक तो मैं खड़ी रही और काफी देर बाद में चली। लेकिन अब मुझे डर नहीं लगता और मैं आसानी से कहीं पर चली जाती हूँ।

अंजू

जब मैं पहली बार 2010 में AC बस में बैठी तो मुझे बहुत अच्छा लगा। कितनी ऊंची और लम्बी बस थी, और गेट भी अपने आप खुला - मुझे ऐसा लगा जैसे में प्लेन में बैठी हूँ।

सिल्वी

जब मैं दिल्ली आई, तो मैं पहली बार बस में चढ़ी थी - घबराहट हो रही थी क्योंकि बस नंबर नहीं पता था और रोड भी नहीं जानती थी।

पहले डर लगता था, लेकिन अब डर नहीं लगता - बस में दिक्कत तो होती है, लेकिन घबराहट नहीं होती।

दरक्शा

2009 में जब हम मेट्रो से पहली बार गए तो डर लगा कि कहीं दरवाज़ा अचानक से ना खुले या उनके बीच में ना फँस जाए। यह भी डर लगा कि कहीं पुल ना गिर जाए।

मेट्रो पर चढ़ने से पहले किसी ने मुझे बताया था कि अगले स्टेशन पर उतरने के लिए कंप्यूटर बोलता रहता है, तो मेरा पूरा ध्यान उसी पर होता था।

मेट्रो में मुझे ठण्ड से डर लगता था क्योंकि कई बार TV पर देखा था कि ठण्ड के कारण बर्फ़ जम जाती है और दरवाज़ा लॉक हो जाता है।

कमलेश

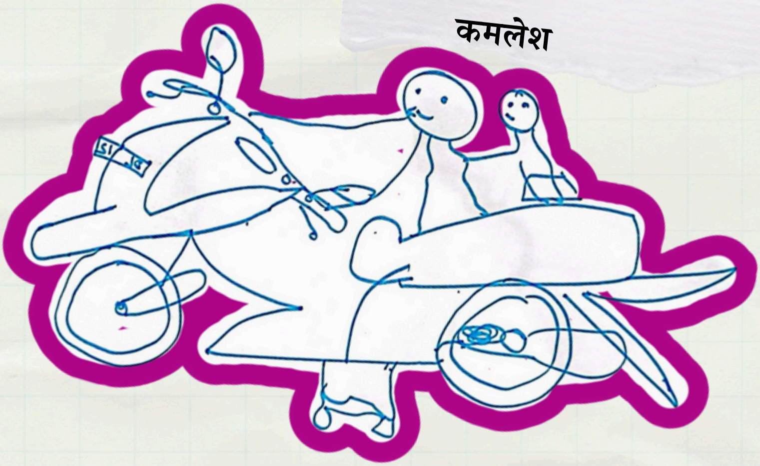

एक बार ओला कैब शेयर में किया था, उसमें दो आदमी थे - वो सही नहीं थे।

गुडगाँव से फरीदाबाद (ससुराल) जाती हूँ, पर बस नहीं लेती। क्यूंकि भीड़ होती है, सीट नहीं मिलती है, थकान होता है, और सेफ भी नहीं होता। बस स्टॉप भी बहुत दूर है गुडगाँव में। कोई फायदा नहीं बस लेने का।

अब आसपास के लिए ऑटो लेती हूँ। आसानी से मिल जाता है, पर पैसा ज़्यादा लगता है। लेकिन उस रूट में बस सुविधा भी नहीं है।

सोनिया

मैं जब दिल्ली के DTC बस में पहली बार चढ़ी थी तो उस दिन मेरे साथ काफी रोचक घटना घटी।

मेरा बेटा 8 साल का था और मैं उसे दिल्ली के DTC बस में पहली बार स्कूल लेकर गयी थी। उस दिन मैं खुद पहली बार बस पर सफर कर रही थी।

जब स्कूल से वापस घर लौटने लगी तब मैंने कोई दूसरी बस पकड़ ली थी। मुझे बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि ये बस कहीं और जाएगी। उस दिन मुझे डर सा तो लगा, लेकिन मैंने कंडक्टर से पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि ये बस बहुत दूर जाएगी। फिर मैं अगले स्टॉप पे उतर गयी और किसी व्यक्ति से पूछा। उस व्यक्ति ने मुझे बताया, और फिर मैं अपने घर सही सलामत पहुँच सकी।

कलिया देवी

मुझे पहले बहुत डर लगता था, मुख़र्जी नगर से यहाँ MFF आने के लिए, जब ट्रेनिंग होते थे। पर इन तीन साल में मैं यहाँ इतने बार आई हूँ, मुझे अब अपना रास्ता पता है। यहाँ से पहले रिक्शा से मेट्रो तक जाना है, फिर वहां से वज़ीराबाद जाना है, फिर चल कर घर। अगर कोई मेरे साथ हो भी नहीं, तब भी मैं अपना रास्ता जानती हूँ।

दीपा

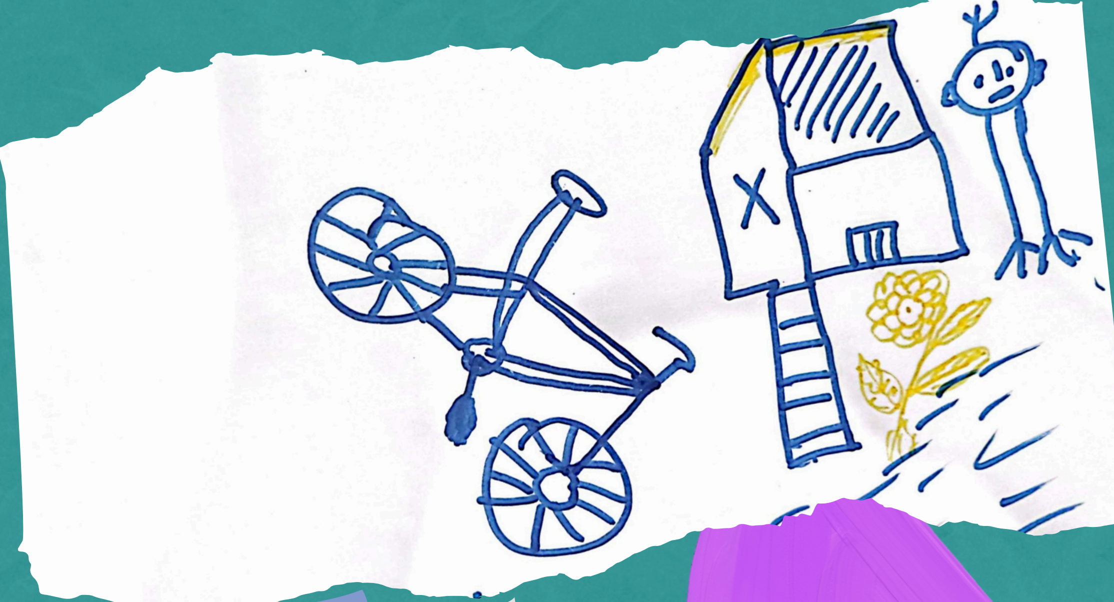

बस में आदमी लोग इधर-उधर छेड़खानी करते हैं। जब मैं पैदल जाती हूँ तो वो लोग गन्दी नज़र से देखते हैं और मुझे माँ-बाप कि गाली देते हैं।

अकेले कहीं भी जाने से डर लगता है।

दीपा

कभी-कभी जब बस ड्राइवर देखते हैं कि महिलाएँ बस के लिए इंतज़ार कर रही हैं तो वो बस नहीं रोकते। उनको पता है कि बस औरतों के लिए मुफ्त है तो वो नहीं रुकते क्योंकि हम पैसा नहीं देंगे। कभी-कभी 2 घंटे तक इंतज़ार करते हैं। इसलिए हम मर्दों के पीछे छुपते हैं, ताकि बस उनके लिए रुक जाये, और फिर हम चढ़ जाए।

बस मैं बैठने का भी जगह नहीं मिलता। कोई सीट नहीं देता क्योंकि उन्हें लगता है कि यह औरत पैसा नहीं दे रही तो सीट क्यों मिलनी चाहिए?

लेकिन अगर महिला कंडक्टर हो तो बस रुक जाती है, और वह हमें सीट भी दिला देती है।

शकुंतला

एक बार मुझे कहीं जाना था, और मेरे साथ दूसरी महिलाएँ भी थीं। चार बस थे, लेकिन कोई हमें नहीं ले जा रहा था। एक बोला वो बस उस जगह नहीं जा रहा था, दूसरा बोला कि बस अभी कुछ देरी से निकलेगा। इन सब को लगा कि हम कमज़ोर औरतें हैं। उनको लगा कि मेरे साथ जो युवा लड़कियाँ थीं, वह मजबूर होंगी।

तो मैं पहले बस पर दोबारा गयी और मैंने ड्राइवर को बोला कि तुम बस के ड्राइवर हो, कंडक्टर हो - तुम्हारा काम है सवारी को लेना। जब मैंने अपनी आवाज़ उठायी, तब वो ड्राइवर ने बोला 'अरे माँ जी, गुस्सा मत हो, हम ले जाएंगे आपको'।

प्रमिला

पहली बार बस में चढ़ी तो डर लगा क्योंकि चढ़ते ही मैं बीमार पड़ गयी। उसके बाद धीरे-धीरे बस में आने-जाने की आदत हो गई। अब मुझे डर नहीं लगता।

शोभा

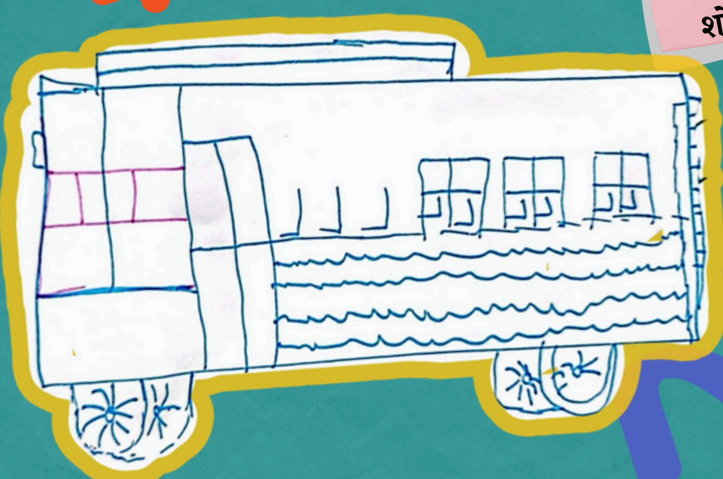

मैं जब मेट्रो पर जाती हूँ, तो लेडीज़ कम्पार्टमेंट में जाती हूँ। मुझे अपना ध्यान रखना है - अगर कम्पार्टमेंट में आदमी होते हैं, तो मैं वहां नहीं बैठती।

मैं अकेले नहीं सफर कर सकती - मुझे मिलकर जाना अच्छा लगता है। मैं इंडिया गेट भी अकेले नहीं जा सकती - मुझे क्या पता कहाँ पर उतरना पड़ेगा?

प्रमिला

पहली बार मैं मम्मी के साथ बस में गयी थी तो बहुत अच्छा लगा था। मुझे इसलिए अच्छा लगा क्योंकि मैं छोटी थी - मुझे हरियाली, पेड़, पौधे और चलता हुआ पानी देख कर अच्छा लगा। हम ऑटो में भी घूमने गए थे।

खुशबू

मार्था फैरल फाउंडेशन

2016 में स्थापित, मार्था फैरल फाउंडेशन (MFF) जेंडर और लिंग आधारित हिंसा को ख़त्म करने और एक जेंडर-न्यायपूर्ण समाज बनाने के उद्देश्य से काम करती है।

MFF अपने काम के ज़रिये एक ऐसी दुनिया की कल्पना करती है जिसमें सभी संगठित और असंगठित, शिक्षा व काम करने की जगहें सुरक्षित और लैंगिक समानता वाले हों।

MFF का उद्देश्य ये है कि सभी व्यक्ति अपने कार्यस्थलों में सुरक्षित और गरिमापूर्ण महसूस करें। इसी उद्देश्य तक पहुंचने के लिए हम तीन क्षेत्रों में काम करते हैं:

- **ट्रेनिंग**: सुरक्षा और लिंग समानता पर व्यक्तियों और संस्थानों को सूचित करना, जागरूक करना, और सशक्त बनाना।
- **अनुसंधान**: शैक्षणिक स्थान और कार्यस्थल पर लैंगिक समानता और यौन उत्पीड़न रोकथाम पर नया ज्ञान विकसित करना और उसके बचाव के लिए काम करना।
- **वकालत**: समाज के विविध लोगों, संस्थानों और सरकारों को लैंगिक समानता के लिए प्रभावशाली नीतियों, प्रथाओं और कानूनों को बनाने और कार्यान्वित करने के लिए प्रभावित करना।

हमारे काम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली घरेलू कामगार महिलाओं के साथ हैं। संस्था के स्थापन से ही हम घरेलू कामगार महिलाओं के साथ सुरक्षित कार्यस्थल और गरिमापूर्ण काम के मुद्दे पर काम कर रहे हैं।

Martha Farrell FOUNDATION

© मार्था फैरल फाउंडेशन 2024